[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 9525 **L**

Unique Paper Code : 2133200018

Name of the Paper : Architectural System in Sanskrit, DSE

Name of the Course : **B.A(Programm), NEP-UGCF-2022**

Semester : VIII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

Instructions for Candidates

छात्रों के लिए निर्देश.

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper

   इस प्रश्न पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. Attempt all Questions.

   सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

3. Answers may be written either in Hindi or in English but the same medium should be followed throughout the paper.

   इस प्रश्न पत्र का उत्तर अंग्रेजी या हिन्दी में से किसी एक भाषा में दीजिए परन्तु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

1. 'वास्तु रत्नाकर' ग्रन्थ के 'भूपरिग्रह प्रकरण' के आधार पर गृहस्थाश्रम की प्रशंसा एवं उसके महत्व पर एक विस्तृत लेख लिखिए । 18

   Write a detailed essay on the praise and importance of 'Grihasthashrama' based on the 'Bhuparigraha Prakarana' of the text 'Vastu Ratnakara'.

   अथवा/ Or

   आचार्य वराहमिहिर के अनुसार 'वास्तुपुरुष' के स्वरूप एवं उसकी दार्शनिक अवधारणा को स्पष्ट कीजिए ।

   Clarify the form and philosophical concept of 'Vastu Purusha' (Cosmic Man) according to Acharya Varahamihira.

P.T.O.

2. निर्माण शैली के आधार पर 'सर्वतोभद्र' और 'नन्द्यावर्त' वास्तु के प्रमुख लक्षणों एवं स्थापत्य में उनके फलों का विवेचन कीजिए । 18

Discuss the main characteristics and architectural results of 'Sarvatobhadra' and 'Nandyavarta' Vastu based on the construction style.

अथवा /Or

बृहद्वास्तुमाला के 'भूमि-प्लवन' (Slope of land) के आधार पर 'पितामह-वास्तु' और 'सुपथ-वास्तु' की विशेषताओं को समझाइए ।

Explain the features of 'Pitamaha-Vastu' and 'Supatha-Vastu' based on 'Bhumi-Plavana' (Slope of land) from the Brihatvastumala.

3. 'बृहत्संहिता' के अनुसार निर्माण के आधार पर 'वर्धमान' और 'स्वस्तिक' वास्तु के लक्षणों एवं उनके विशिष्ट फलों का वर्णन कीजिए । 18

Describe the characteristics and specific results of 'Vardhamana' and 'Swastika' Vastu based on construction according to Brihatsamhita.

अथवा /Or

बृहद्वास्तुमाला के आधार पर 'दीर्घायु-वास्तु', 'पुण्यक-वास्तु' और 'अपथ-वास्तु' के लक्षणों एवं प्रभावों की तुलनात्मक विवेचना कीजिए ।

Give a comparative analysis of the characteristics and effects of 'Dirghayu-Vastu', 'Punyaka-Vastu', and 'Apatha-Vastu' based on Brihatvastumala.

4. वीथियों के वर्गीकरण में 'भूतवीथी' और 'वैश्वानरी वीथी' के विशिष्ट लक्षणों का उल्लेख करते हुए उनके स्थापत्य प्रभावों की व्याख्या कीजिए । 18

Explain the architectural impacts of 'Bhutavithi' and 'Vaishvanari Vithi' while mentioning their specific characteristics in the classification of Vithis.

अथवा /Or

बृहत्संहिता के अनुसार गृह-निर्माण के पूर्व किए जाने वाले 'शकुन विचार' और 'प्रथम विधान' (भूमि-पूजन) के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

Clarify the importance of 'Shakuna Vichara' and 'Prathama Vidhana' (Bhumipuja) before starting home construction according to Brihatsamhita.

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर विस्तृत टिप्पणियाँ लिखिए: 3×6=18

Write detailed notes on any **three** of the following:

(i) दिक्-ज्ञान एवं दिशा निर्धारण की विधि (Orientation and method of direction determination)

(ii) शिल्पन्यास विधि (Shilpnyasa Vidhi)

(iii) गृहविभाग एवं द्वार-सज्जा के नियम (Rules of Grihavibhaga and Door Decoration)

(iv) निषिद्ध लेखाकर्म एवं निषिद्ध काष्ठकर्म (Nishiddha Lekhakarma and Nishiddha Kashthakarma)

(v) स्तम्भ-स्थापना के नियम (Rules of Stambha-sthapana)